तेरी मेरी सबकी बात

पूँजी और बाज़ार के रिश्तों में नैतिक-अनैतिक क्या ?

बात सात-आठ साल पुरानी है लेकिन है दीगर। विश्वसुन्दरी, एक सुपर मॉडल, सुन्दर चेहरे और खूबसूरत देह की स्वामिनी नफ़ीसा जोज़फ एक रात कमरे में फंदे से लटक कर जान दे देती है।

कहते हैं कि जिन्दगी की हर खुशी दौलत से खरीदी जा सकती है। किसी औरत की खूबसूरती का पैमाना है उसका चेहरा, उसकी देहयष्टि! विश्वसुंदरी के खिताब का ताज पहने लाखों दिलों की धड़कन है वह लेकिन इस सुख का अन्त होता है अवसाद में-आत्म हत्या में।

यह मेरी जिन्दगी है और कि यह मेरी देह है के नारों को जीवन में उतारती एक सफल औरत वर्जनाओं के बन्धन से मुक्त-लिबरेटेड वूमन। वह क्यों जान दे रही है! शादी!! बार-बार शादी टूटती है? क्यों!! मॉडल, फिल्म अभिनेता, बिजनेस मैन-इनकी जिन्दगी का दर्शन भी तो वही है कि खाओ-पीओ, मस्ती करो। शादी-ब्याह? रबिश! क्या कहा? नफ़ीसा जोज़फ शराब बहुत पीती थी? यारो, अब आप लोगों की पार्टियों में शराब जैसे सात्विक पेय का क्या काम। बिना ड्रग्स के कॉम्बीनेशन के शराब क्या! अरे ऐसा किक् माँगता कि सीधा ऊपर। दो दिन तक लगातार नाच सकता, फास्ट, एक रात में कितनी बार, कितनी लड़कियों के साथ सेक्स कर सकता! व्हॉट अ लाइफ़, फुल ऑफ थ्रिल, किक्-किक्।

फिर, इसके बाद? मोर थ्रिल! मोर किक्, नया ड्रग ट्राई किया क्या ?

इतना सुख, इतनी मौज मस्ती, फिर उसके बाद ये डिप्रेशन क्यों है। इससे भी ज़्यादा कुछ मांगता? पैसा! बहुत है। ब्लैक मनी है। पैसा कमाना है? बहुत तरीके हैं। दिमाग चाहिये। अक्ल हो तो दुनियां कदमों पर। हर्षद मेहता को देखा। आज तो अनेकों हर्षद मेहता दिखाई देते हैं। वह कितना जीनियस। कितने हजार करोड़ कमा लिया। यंग आदमी, कितना डायनेमिक। सब अक्ल का चमत्कार। लेकिन कैसे गड़बड़ हुआ! इतनी जल्दी हार्ट धोखा दे गया। खुद तो गये सनम हमें भी ले डूबे। दो बड़े बैंक अधिकारी, उन्हें पहले ले मरा हर्षद मेहता। वे बेचारे उम्र दराज ठहरे, नहीं झेल पाये छाती पर पैसे की गठरी का बोझ।

पैसा भी क्या चीज है। गले में पत्थर बांधकर मरने के माफिक है।

लेकिन पैसे के बिना कोई लाइफ है? दुनियां में कितनी मस्ती है। कोई दुबई बुलाता शॉपिंग के लिये। कोई बोला सिंगापुर जाओ वीक ऐंड पर। शॉपिंग करो-मौज मस्ती करो। गर्मी की छुट्टी में स्विट्जरलैंड। न हो तो योरोप का पूरा एक चक्कर लगा आओ। व्हॉट अ फूल यू आर, बीवी के साथ कौन जाता है! गो विद अ यंग न्यू कम्पैनियन। अगर पैसा है तो, सब कुछ उपलब्ध है।

बीवी! वो अपना इन्तजाम कर लेगी। बहुत बेकारी है आज नौजवानों में, कोई मिल जायेगा। नया लड़का, यंग स्टूडेंट! बेटे का दोस्त! चलेगा। इस चमकीली, चौंधियाती दुनिया में देखो, सब कितना हँस रहे हैं। हर नौजवान जोड़ा थिरक रहा है। हाथों में जाम है, पसीने में लथपथ आपस में लिपटे-गुंथे। आंखों में नशे की डोरियां खिंची है। पूरी रात नाचेंगे, गायेंगे, मस्ती करेंगे, अकेले में, समूह में। नये नये प्रयोग। न हुए मुनि वात्स्यायन! कामसूत्र को अपडेट करने की जरूरत है।

फिर? व्हॉट नेक्स्ट!! ये जिन्दगियां बेमतलब कब तब प्रेतछाया सी डोलेंगी। क्यों इस रात की खिलखिलाहट का अंत अवसाद में होता है। क्यों शरीर इतनी जल्दी बुढ़ाने लगता है। क्यों हाथ पैर अशक्त होने लगते हैं। कांपने लगते हैं और क्यों फिर नींद की गोलियों के सहारे रातें गुजरती हैं और एक रात ढेर सारी नींद की गोलियां लेकर चिरनिद्रा के लिये मन तड़पता है। बरसों पहले सौन्दर्य साम्राज्ञी मर्लिन मनरो की याद आती है। अमरीकी समाज के शीर्षस्थ हस्तियों की चहेती, दुनियां के युवाओं के हृदय की रानी, मर्लिन मनरो इतनी जल्दी अवसाद ग्रस्त होकर आत्महत्या कर लेगी, किसी ने न सोचा था।

0 0 0

पूँजी और बाज़ार के रिश्तों में नैतिक-अनैतिक कुछ नहीं होता। व्यापार में भी सब कुछ जायज़ है। नजर कमाई और मुनाफे पर होती है। बाजारवाद में पैसा-व्यापार और भोगवादी जीवन पद्धति होती है। जब औरत की देह बाजार में होती है... मीडिया की पूंजी होती है। देह व्यापार पुराने जमाने के कोठों में या रेड-लाइट एरिया में नहीं होता अब। अब संभ्रांत और हाइ क्लास सोसाइटी का हिस्सा बनकर पूँजी और देह का संबंध बनता है। लाभ और हानि के इस गणित में प्रेम.... संवेदना और नैतिक मूल्य जैसे शब्द किसी दूसरी दुनिया की शब्दावली लगते हैं। इसीलिये जब दो नावों पर सवार होने की कोशिश होती है तो फिर अवसाद जैसी बीमारियां घेरने लगती हैं। पिछले बरसों में हरियाणा के कद्दावर राजनेता (और मंत्री रहे) गोपाल टांडा और गीतिका शर्मा का प्रकरण लोगों की स्मृतियों में है। आखिर टीन एज़र लड़की में ऐसी क्या योग्यता थी कि वह गोपाल टांडा की एयर लाइन की मात्र परिचारिका बन कर लाखों कमा रही थी। वह भी प्रसन्न, घरवाले भी प्रसन्न... आखिर सुयोग्य कमाऊ लड़की थी परिवार की। इस बाजार की यही शर्त होती है। 'खुल जा सिम सिम...' वाले दरवाजे से झांकती दौलत और ग्लैमर की चकाचौंध... यहाँ जाना आपकी मर्जी से होगा लेकिन वापिस लौटने का दरवाजा नहीं होता। देह के बाजार में शर्तें बाजार की होती हैं। ऐसा ही प्रसंग यशपाल के 'दिव्या' उपन्यास में मारिश और गणिका बन चुकी दिव्या के बीच है। दिव्या कहती है कि वह अपने इस जीवन से प्रसन्न है क्योंकि वह स्वतंत्र जीवन जीने की आकांक्षा रखती है। वह कहती है कि उसकी देह पर उसका अधिकार है और वह स्वतंत्र नारी है। मारिश और दिव्या के बीच लंबा वाद-विवाद होता है। मारिश कहता है कि जब देह व्यापार का साधन बन जाती है तो फिर स्वयं का अधिकार नहीं रह सकता। उसके प्रशंसक-ग्राहक और व्यापार के नियम इस अधिकार को तय करते हैं।

ग्लैमर का बाजार भी अपनी शर्तों से संचालित होता है। संस्कार, परंपरा, नैतिकता के पाठ... यह बाजार से टकराते भी हैं और मानसिक अंतर्द्वन्द्व का वातावरण भी रच सकते हैं जिसकी स्वाभाविक परिणति अवसाद में ही है। श्रम आधारित सामाजिक समानता की अवधारणा स्त्री मुक्ति की पहली शर्त है। स्वावलंबन और आत्म निर्भरता ही स्त्री स्वातंत्र्य की राह बनाते हैं। इसके बिना 'देह की स्वतंत्रता' का मुद्दा मात्र एक नारा बन कर रह गया है जो भ्रामक है और स्त्री देह को बाजारवाद के उपभोग के लिये धकेल रहा है। गीतिका शर्मा भी इस कुचक्र का शिकार हुई और आत्महत्या के अतिरिक्त इससे निकल छूटने का कोई रास्ता उसके लिये नहीं बचा।

कुछ ही वर्ष हुए हैं फिल्म स्टार आदित्य पंचोली और उनकी पत्नी ज़रीना वहाब के पुत्र सूरज पंचोली की गिरफ्तारी हुई कि वह अपनी महिला मित्र ज़िया खान की आत्महत्या का सबब बना। ग्लैमर के बाजार में हारे हुए खिलाड़ी अवसाद ग्रस्त होकर आत्महत्या ही करते हैं। ''ईज़ी मनी'' की आदत पड़ जाती है तो फिर हाथ पैर हिलाना और मेहनत करना किसे भायेगा। और कुछ पीछे जायें। एक संभ्रांत सी दिखने वाली नवयुवती जो आधुनिक परिधान में तो थी लेकिन कपड़े मैले थे, बाल अस्त-व्यस्त। बदहवासी की स्थिति में भीख मांग रही थी। पता चला कि वो कोई मॉडल रही है, छोटे-मोटे रोल भी किये हैं फिल्मों में। अब मांग नहीं है उसकी। सो नशीली गोलियां लेने लगी। जब उसके लिये भी पैसे नहीं रहे तो भीख मांगना शुरू कर दिया और खबर अखबारों की सुर्खी बनी।

कुछ दिनों पहले की एक और खबर। ग्लैमर की दुनिया की एक और नवयुवती शिखा जोशी ने भी आत्महत्या कर ली। कुछ छोटे-मोटे फिल्मी रोल किये, कुछ मॉडलिंग की। इस बाजार में भी धकापेल है। कार से लेकर नल की टोंटी तक, बाथरूम से लेकर फर्श और टाइल्स तक... सभी स्त्री देह से सजे हैं। अपनी देह लेकर 'स्वतंत्र' बनने की राह में लंबी कतारें हैं और धक्का मुक्की है। नित 'नयेपन' से बाजार का आकर्षण बनता है और पीछे धकियाते गये लोग या तो नशे के आदी होकर या अवसाद ग्रस्त हो आत्महत्या करते हैं। कभी-कभी होटलों आदि में देह व्यापार के रैकेट में पकड़ी गयी लड़कियों के झुंड में भी मॉडल या कलाकार दिखाई दे जाते हैं जो अब ग्लैमर के बाजार से धकिया दिये गये हैं।

0 0 0

पिछले दिनों अखबारों में एक खबर प्रमुखता से छपी थी। कई सवाल फिर खड़े हो गये। तेलुगु फिल्मों की एक लोकप्रिय हीरोइन आरती अग्रवाल की मृत्यु अमरीका के एक अस्पताल में हो गयी। इकत्तीस वर्षीय हीरोइन की वहां कॉस्मेटिक सर्जरी हो रही थी। उसे लगता था कि वह कुछ मोटी हो रही है। उसे तुरंत अपनी देहयष्टि संवारनी थी और कोमल तन्वंगी काया में अवतरित होना था। आजकल कॉस्मेटिक सर्जरी में त्वचा के नीचे अतिरिक्त वसा को 'लिपो सक्शन' आपरेशन में गलाकर सक्शन विधि से पंप द्वारा खींचकर बाहर निकाल दिया जाता है।

अखबार की ही खबर के मुताबिक हैदराबाद के कॉस्मेटिक सर्जन ने अभिनेत्री आरती अग्रवाल से कहा कि उसकी त्वचा के नीचे वसा नहीं के बराबर है, अर्थात् पहले भी उसकी यह सर्जरी हो चुकी है। सिर्फ पेट के नीचे के हिस्से में थोड़ा मोटापा है जिसकी सर्जरी कराने की सलाह वह नहीं देंगे।

अब सौन्दर्य का बाज़ार तो देह के आकर्षण पर ही टिका है। देह का ग्लैमर है तो उसका मूल्य है। इसलिये समय गंवाना संभव नहीं। उम्र को परे रखकर उसे तुरंत अपनी कोमल तन्वंगी देहयष्टि चाहिये थी। सर्जरी यहां नहीं तो अमरीका में सही। पैसा है तो सब कुछ हो सकता है। पैसे से ही पैसा आता है। आखिर बाज़ार किसी का इंतजार नहीं करता। नित नया स्वरूप बाज़ार की ज़रूरत है।

आरती को इसकी कीमत अपनी जान से चुकानी पड़ी। आखिर प्रकृति के भी अपने नियम होते हैं।

बाजारवाद का यही चरित्र है, यही रूपरंग है और यही नियति है। यहां हर चीज़ बिकाऊ है। यह शरीर, व्यक्तित्व। इसीलिये यह बाजार नैतिकता शून्य है। ऊँची से ऊँची बोली के इस बाजार में यह मूल्यहीनता का दौर है। यहां राजनीति, धर्म, संस्कृति सब बिकाऊ बनने की प्रक्रिया में हैं। जो इस बाजारवाद में डूबे हैं वे हंसते-खिलखिलाते हुए मर जाते हैं। रात की मस्ती सवेरे के अवसाद को नहीं झेल पाती। सूरज की रोशनी में रात के बदनुमा दाग उजागर होने पर उन्हें देखने की ताब नहीं रहती।

जो इस बाजारवाद की दौड़ में शामिल नहीं हो सकते वे बाजार तक न पहुँच पाने की निराशा से गर्त में डूबने लगते हैं। यह सामाजिक निराशा का दौर है। भविष्य के लिये सुनहरे सपने देखते नौजवानों का समाज, कलाकार, लेखक, संस्कृति कर्मी सब इस सर्वग्रासी बाजार के विस्तार से हैरान हैं, परेशां हैं और निराश हैं। वे विज्ञापित नहीं हैं। उनके पास धन नहीं है-मार्केटिंग के नुस्खे नहीं हैं-उनके पास मार्केट नहीं है!

इसीलिये किशोर से लेकर बूढ़ेपन की दहलीज तक पहुँचे सब दौड़ रहे हैं, हाँफ रहे हैं। सबको कुछ पाना है! लेकिन कहाँ है मंजिल। कहां है अभीष्ट!! कोई सन्तुष्ट नहीं। उसकी कमीज़ मेरी कमीज़ से ज्यादा सफेद कैसे? उसकी साड़ी मेरी साड़ी से ज्यादा चमकीली कैसे-कैसे??

सबको सब कुछ चाहिये, जल्दी-जल्दी चाहिये। चोरी करो-डकैती डालो, मालदार दोस्त हो, उसे मार डालो, अपना ही घर लूट लो, फ्रॉड करो। दहेज झटको, बहू जलाओ! जो दिल चाहे करो लेकिन जल्दी-जल्दी पैसा लाओ और लाओ मौज मस्ती, रंगरेली।

0 0 0

इस अवसाद के दौर को समझने के दो रास्ते हैं। एक तरीका है आध्यात्म का। जेहि विधि राखिये राम तेहि विधि रहना

होय लेकिन यह प्रवृत्ति अकर्मण्यता की है। यथास्थितिवाद की है। सामाजिक ठहराव की है। जो भी जैसा मिल रहा है उसे उसी रूप में स्वीकार कर भाग्यवाद के भरोसे बैठ जाने की है। इससे किसी का भी भला नहीं हो सकता। अवसाद की काली छाया इससे और गहरा जाती है तथा रास्ता और कठिन होता जाता है। भविष्य के लिये कोई सकारात्मक सार्थक संभावना की तलाश के रास्ते नहीं मिलते हैं इससे।

दूसरा रास्ता इस निराशा के दौर का कारण समझना और उसे विश्लेषित करना बुद्धिजीवियों, लेखकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं की चिंता का अनिवार्य हिस्सा बनता है। यह बाजारवाद और मूल्यहीनता का दौर इस व्यवस्था की चरम पतनशील अवस्था है। पूंजी पर आधारित समाज व्यवस्था अंततः बाजार व्यवस्था का रूप ले लेती है। व्यवस्था इस संकट को सार्वजनिक क्षेत्रों, कल्याणकारी सामाजिक कार्यक्रमों और योजनाओं को समाप्त कर सभी उद्योगों, परियोजनाओं को निजी क्षेत्र में सौंप कर हल करने का प्रयास करती है। निजी क्षेत्र में फिर पूंजी के वर्चस्व (मनॉपली कैपिटलिज़्म) की स्थापना के साथ यह विषम चक्र बढ़ता ही जाता है। इसकी परिणति अंततः राष्ट्र व्यापी आर्थिक संकट है। घनघोर पूंजी असंतुलन है। बेरोजगारी लगातार बढ़ती जाती है। आप अगर अपनी कला, अपनी बुद्धि, कौशल, अपना शरीर, श्रम, अपना परिवार, संबंध, सुख चैन सब कुछ बाजार में लेकर खड़े हो सकते हैं, दाँव पर लगा सकते हैं तो ठीक, वर्ना इस चकाचौंध भरे बाजार से धकिया कर अंधेरे में गिरा दिये जायेंगे।

इस प्रक्रिया को समझने के बाद सामाजिक परिवर्तन की इच्छा और आकांक्षा रखने वाले लेखक, बुद्धिजीवी, संस्कृति कर्मी और सामाजिक कार्यकर्ताओं का एजेण्डा तय हो जाता है। अवसाद के घटाटोप में निराशा नहीं बल्कि भविष्य की कार्ययोजना बनने लगती है। सामाजिक परिवर्तन के लिए सामूहिक प्रयासों के कार्यक्रमों की शुरूआत होने लगती है।

सूखे से चटकी जमीन पर जब झमाझम बारिश होती है तो किसान की हंसी कभी देखी है। बड़ी इमारतों के निर्माण में लगे परिवारों को दोपहर के समय जब बड़ी बूढ़ी औरत रोटियों के ऊपर मिर्च की चटनी के साथ थोड़ा साग-सब्जी भी रख देती है तो उस समय रोटी खाते हुए आंखों में चमक और होंठों पर भोली हंसी देखी है! यही जीवन का सार है जो संतुष्टि से मिलता है। यह हंसी बाजार में खड़े लोगों में दुर्लभ है।

28-एम0आई0जी0
अवन्तिका-।
रामघाट रोड, अलीगढ़